Karnataka School Examination and Assessment Board.

IIPUC Mid Term Examination Oct. 2025

Subject : Hindi (03).

खण्ड 'क'

QN NO.		Marks
I अ.		
1.	i) सुजान महतो	1
2.	iv) भिक्षुक	1
3.	ii) गंगा मैया	1
4.	iv) शीला अग्रवाल	1
5.	iii) मुरझाना	1
6.	i) गल्ले	1
7.	iv) मानवता	1
8.	i) घर	1
9.	iii) बरगद	1
10.	ii) उपेन्द्रनाथ अश्क	1
आ)		
11.	दर्द	1
12.	सत्य	1
13.	सेवा	1
14.	निर्णय	1
15.	सम्मान	1
इ)		
16.	a) फूले न समाना — iii) अत्यधिक खुश होना	1
	b) नाम जगाना — iv) कीर्ति पाना	1
	c) पोल खुलना — i) रहस्य प्रकट होना	1
	d) ढाढ़स बांधना — vi) हिम्मत बढ़ाना	1
	e) नींव डालना — ii) आरंभ करना	1

खण्ड ख

17 उत्तर: 'सुजान भगत' पाठ में ग्राम्य जीवन से जुड़े एक किसान के परिवार से संबंधित वर्णन है। सुजान भगत का अपने ही घर में अनादर होने लगा। सुजान के हाथों से धीरे-धीरे कई अधिकार छीने जाने लगे। गाँव भर में सुजान का मान सम्मान बढ़ता था और घर में घटता था। वह अब घर का स्वामी नहीं, मंदिर का देवता था। एक बार एक भिखमगा (भिक्षुक) द्वार पर आया तो घर के किसी ने उसे भीख नहीं दिया तो स्वयं सुजान छबड़ी में जौ भरकर देने जाने लगा तो भोला ने उसे रोका और निंदा की। फिर भी सुजान ने कुछ नहीं कहा। बुलाकी भी अपने बेटों का पक्ष लेती थी। इस प्रकार घर में सुजान का अनादर हुआ। 3

18. 'गंगा मैया से साक्षात्कार' पाठ में भ्रष्टाचार एवं महंगाई जैसी ज्वलंत समस्याओं को उजागर किया गया है। समाज में प्रदुषण की समस्या है जो दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। चरित्र का संकट भी है। सेवा करने से चरित्र बनता है। लेकिन अब मेवा प्राप्त करना ही उद्देश्य है। लोग समझते हैं कि वे कैसे भी कर्म करें गंगा उन्हें तार देंगी। महँगाई, रिश्वतखोरी और पाशविकता बढ़ती जा रही है। धर्म का व्यापारीकरण हो रहा है। लोग कुर्सी अर्थात अधिकार, धन, वैभव और सम्मान के लिए लड़ रहे हैं। पशु-पक्षी भी मनुष्य के कुकर्मों पर हँस रहे हैं। हमारे समाज में ये समस्याएँ हैं। 3

19. 'कर्तव्य और सत्यता' पाठ में कर्तव्यों के प्रति जागरूकता को उजागर किया गया है। धर्म-पालन करने के मार्ग में सबसे अधिक अड़चन चित्त की चंचलता, उद्देश्य की अस्थिरता और मन की निर्बलता से आती है। मनुष्य के कर्तव्य मार्ग में एक ओर तो भले और बुरे कामों का ज्ञान और दूसरी ओर आलस्य और स्वार्थपरता रहती है। मनुष्य का मन इन दोनों के बीच पड़ा रहता है। यदि उसका मन पक्का हुआ तो वह आत्मा की आज्ञा मानकर अपने धर्म का पालन करता है। यदि मन दुविधा में पड़ा रहा तो स्वार्थपरता निश्चय उसे आ घेरेगी और उसका चरित्र घृणा के योग्य हो जाएगा। इसप्रकार धर्म-पालन करने के मार्ग में कई अड़चनें आती हैं। 3

२०. मन्नू भंडारी की माँ उसके पिता के ठीक विपरीत थीं। 3
वे पढ़ी-लिखी नहीं थी। उनमें धरती से कुछ ज्यादा ही धैर्य और सहनशक्ति थी। वे पिताजी की हर ज्यादती को अपना प्राप्य और बच्चों की हर उचित-अनुचित फरमाइश और जिद को अपना फर्ज समझकर बड़े सहज भाव से स्वीकार करती थीं। उन्होंने जिंदगी भर अपने लिए कुछ माँगा नहीं, चाहा नहीं, केवल दिया ही दिया है।

---

२१. संदर्भ: प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'साहित्य-गौरव' में संकलित 'सुजान भगत' से लिया गया है। 1
इस कहानी के लेखक 'मुंशी प्रेमचंद' हैं। प्रस्तुत वाक्य सुजान ने भिक्षुक से कहा है।
स्पष्टीकरण: सुजान भगत का अधिकार फिर से वापस मिल गया था। उसने कड़ी मेहनत से काफी फसल उपजायी। चैत का महीना था। सुजान भगत टोकरे में अनाज भर-भर के दे रहा था और उसके दोनों लड़के घर में अनाज रख रहे थे। उस समय भाट-भिक्षुक सुजान भगत को चारों ओर से घेरे हुए थे। उनमें वह भी एक भिक्षुक था, जो आज से आठ महीने पहले सुजान भगत के द्वार से निराश होकर लौट गया था। सुजान भगत ने उसे पहचान लिया और उसे पूछा - आज कहाँ-कहाँ चक्कर लगाकर आए हो। भिखारी ने कहा कि वह सबसे पहले सुजान ही के पास आया है। भगत ने उसे जितना 2
अनाज उठाकर ले जा सकते हो ले जाने के लिए कहा।

---

२२. संदर्भ: प्रस्तुत अवतरण 'कर्तव्य और सत्यता' पाठ से लिया गया है। इसके लेखक डॉ. श्यामसुन्दर दास 1
हैं। कर्तव्य के महत्व को दर्शाते हुए न्याय पूर्वक कर्तव्य को निभाना चाहिए। इस प्रकार न्याय और कर्तव्य के घनिष्ठ संबंध को दर्शाया गया है।
स्पष्टीकरण: डॉ. श्यामसुंदर दास कहते हैं कि कर्तव्य करना हम लोगों का परम धर्म है। संसार में मनुष्य का जीवन कर्तव्यों से भरा हुआ है। घर में, पारिवारिक सदस्यों के बीच और समाज में मित्रों, पड़ोसियों और प्रजाओं 2
के बीच मनुष्य को अपना कर्तव्य निभाना पड़ता है। कर्तव्य निभाने से हम समाज के प्रति देश के प्रति सच्चा कर्तव्य करना न्याय पर लोगों के चरित्र की शोभा बढ़ती है। कर्तव्य निर्भर है। ऐसे सामाजिक न्याय को समझने पर, प्रेम से कर्तव्य निभा सकते हैं।

23. संदर्भ: उक्त वाक्य 'गंगा मैया से साक्षात्कार' पाठ से लिया गया है। लेखक डॉ. नरसौने लाल चतुर्वेदी ने देश के राजनैतिक कलुषित वातावरण को दर्शाया है। 1

स्पष्टीकरण: गंगा मैया देश के राजनैतिक कलुषित वातावरण का वर्णन करते हुए कहती हैं - समाज में अनेक समस्याएँ हैं। उसमें राजनीति के क्षेत्र में दल से दल लड़ता रहता है। इन सबका कारण है - कुर्सी' के लिए झगड़ा है। लेखक कहते हैं बाजार में खूब कुर्सियाँ उपलब्ध हैं, सस्ती और महँगी से महँगी। कुर्सी का तात्पर्य लेखक को स्पष्ट करते हुए गंगा मैया कहती हैं - कुर्सी से मेरा मतलब शक्ति है और शक्ति माने वैभव, धन, सम्मान कीर्ति आदि। एक बार जबान पर इसका चस्का लग गया तो फिर कुछ अच्छा नहीं लगता। 2

---

24. संदर्भ: इस गद्यांश को मन्नू भण्डारी की आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' से लिया गया है। डॉ. अंबालाल से मन्नू की तारीफ सुनकर मन्नू के पिता का प्रसन्न होना और मन्नू पर गर्व करने का भाव दर्शाया गया है। 1

स्पष्टीकरण: आजाद हिन्द फौज के मुकदमे का सिलसिला था। सभी कॉलेज, स्कूलों, दुकानों के लिए हड़ताल का आह्वान था। शाम को अजमेर के पूरे विद्यार्थी वर्ग को सम्बोधित करते हुए मन्नू भण्डारी ने एक बड़ा भाषण दिया। भंडारी जी के अंतरंग मित्र डॉ. अंबालाल ने गर्मजोशी से मन्नू का स्वागत किया। वे चौपड़ पर मन्नू का भाषण सुनकर सीधा भंडारी जी को बधाई देने आ गए। डॉ. अंबालाल ने मन्नू की खूब प्रशंसा करते हुए बधाई दी। वे बोलते जा रहे थे। और पिताजी के चेहरे का संतोष धीरे-धीरे गर्व में बदलता जा रहा था। 2

---

25. सूरदास भगवान श्रीकृष्ण के रूप सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहते हैं - गोपियों ने यमुना नदी तट पर नंद बाबा के पुत्र श्रीकृष्ण को देख लिया। 3 वे मोर मुकुट पहने हुए हैं। कानों में मकराकृत कुण्डल धारण किये हुए हैं। पीले रंग के रेशमी वस्त्र पहने हुए हैं। उनके तन पर चन्दन-लेप है वे अत्यंत शोभायमान हैं। उनके दर्शन मात्र से गोपिकाएँ तृप्त हुईं। हृदय की तपन बुझ गई। वे सुन्दरियाँ प्रेम-मग्न हो गईं। उनका हृदय भर आया।

26) रहीम जी चिता और चिंता के अंतर को स्पष्ट करते हुए कहते है कि चिता केवल निर्जीव शरीर जलाती है। लेकिन चिंता जीवित मनुष्य को निरंतर जलाती रहती है। चिंता, चिता से भी अधिक दुःख देती है। चिन्ता से व्यक्ति हर पल तड़पता रहता है। इसीकारण रहीम जी कहते है कि चिता की तुलना में चिंता के परिणाम अधिक दूरगामी और विनाशकारी होते है। किसी भी समस्या का परिणाम चिंता नहीं होनी चाहिए बल्कि चिंता का धैर्य से सामना कर उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए। 3

---

27) महादेवी वर्मा कहती हैं कि जीवन में सुख और दुःख दोनो का समान महत्व है, ये जीवन के अभिन्न अंग है। जिस तरह मेघ की सार्थकता पिघल कर बरसने में है। जग को आनंद देने में है, उसी प्रकार जीवन की सार्थकता परिस्थितियों का डट कर सामना करने में है। मनुष्य के लिए आवश्यक है कि वह जीवन को उसकी परिपूर्णता में स्वीकार करें। 3

---

28) 'गहने' कविता में माँ की ममता तथा बेटी की भावुकता का मर्मस्पर्शी वर्णन है। माँ बेटी को गहने पहनाकर सुंदर दिखाना चाहती है। बेटी को गहने और रंगीन कपड़ो से अधिक माँ का मातृत्व महत्वपूर्ण लगता है। इसीलिए वह गहने पहनने के लिए मना करती है। वह कहती है कि माँ तुम ही मेरा गहना हो और मैं तुम्हारा गहना हूँ। इसका आशय व्यक्त करते हुए कवि कहते है कि माँ का मातृत्व बेटी के लिए असली गहने है। इनके समक्ष अन्य गहनों का कोई मूल्य नहीं है। 3

---

29) आधुनिक कविता 'कायर मत बन' के कवि नरेन्द्र शर्मा है कवि ने मनुष्य को कायर न बनने का संदेश दिया है कवि मानवता को अत्यधिक महत्व देते हुए दुष्टों के सामने आत्मसमर्पण न करने के लिए कहते हैं। यदि कोई मुर्ख युद्ध के लिए ललकारता है तो उसको मुँहतोड़ जवाब देना चाहिए। ऐसे दुश्मन को प्रेम केवल पर जीतना चाहिए नहीं तो उसे सबक सिखाना चाहिए कवि के अनुसार यह जीवन युद्ध भूमि के समान है। हमें जीवन में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है 3

इसलिए हमें कायरता को छोड़कर वीरता, साहस और निडरता से दुश्मन का सामना करना चाहिए।

30) संदर्भ: इस पद्यांश को संत रैदास द्वारा रचित 'रैदासबानी' से लिया गया है। इसमें रैदास जी भक्त और भगवान के बीच के संबंध का वर्णन करते हैं। 1

भावार्थ: भगवान और भक्त के बीच के संबंध को स्पष्ट करते हुए रैदास जी कहते हैं कि भगवान के बिना भक्त का कोई अस्तित्व नहीं है। प्रभु जी यदि दीप हैं तो भक्त वर्तिका के समान, दोनों मिलकर प्रकाश फैलाते हैं। प्रभु जी यदि मोती हैं तो भक्त धागा है, दोनों मिलकर सुंदर हार बन जाते हैं। दोनों का मिलन सोने पे सुहागे के समान है। 2

विशेष: 1) रैदास प्रभु जी को स्वामी और अपने आप को उनका दास या सेवक मानते हैं। रैदास जी की दास्य भक्ति प्रकट होती है।
2) रैदास जी भाषा सरल और सहज है।

संदर्भ:
31) प्रस्तुत पद्यांश 'रहीम के दोहे' से लिया गया है। इस कविता के कवि अब्दुर्रहीम खानखाना है। इस दोहे में वाणी से होनेवाले अनर्थों का वर्णन किया गया है। 1

भावार्थ: इस संसार में सारे अनर्थों के लिए बिना सोचे-समझे किए गए व्यर्थ-प्रलाप ही कारण है। बातों से बिगड़ी हुई बात बन भी सकती है या बना-बनाया काम बिगड़ भी सकता है। रहीम इसी को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि जिह्वा (जीभ) पगली है, स्वर्ग पाताल की आसपास की सभी बातें करती हैं। कुछ उल्टी-सीधी बातें कहकर आराम से मुँह के अंदर पहुँच जाती है लेकिन उसका परिणाम सिर को झेलना पड़ता है। जूतों की मार सिर को सहनी पड़ती है। जिह्वा को काबू में रखना चाहिए, नहीं तो उसका परिणाम भुगतना पड़ता है। 2

विशेष:- i) मधुर वाणी तथा विवेक बुद्धि के महत्व को दर्शाया गया है।
ii) भाषा सरल-खड़ी बोली का प्रयोग है।

31) संदर्भ: प्रस्तुत पद्यांश 'अधिकार' कविता से लिया गया है। कवयित्री महादेवी वर्मा जीवन में वेदना के महत्व को दर्शाते हुए, वेदना मनुष्य को मजबूत बनाती है और विषम परिस्थिति से डट कर मुकाबला करना सिखाती है। |

भावार्थ: महादेवी वर्मा कहती है कि अमरलोक में वेदना और अवसाद (दुःख) नहीं है। ऐसे लोक में दुःख, दर्द और ईर्ष्या की अनुभूति ही नहीं है। ऐसी स्थिति में मनुष्य कभी किसीका हमदर्द नहीं बन सकता। कष्ट में किसी का साथ नहीं दे सकता। अमरलोक में सुख और दुःख का कोई महत्व नहीं है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का अवसर भी नहीं मिलेगा। इस लोक से भूलोक (मनुष्य) लोक हजार गुना बेहतर है क्योंकि धरतीलोक मनुष्य एक-दूसरे के वेदना, दुःख दर्द को समझ सकता है। संकट काल में एक मनुष्य-दूसरे मनुष्य की सहायता करता है। 2

विशेष:- कवयित्री जीवन में वेदना की अनुभूति के महत्व को दर्शाती है।

अथवा

---

31) संदर्भ:
उपरोक्त पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'साहित्य गौरव' में संकलित कविता 'कायर मत बन' से लिया गया है। इसके रचयिता नरेन्द्र शर्मा हैं। |

भावार्थ:- 'कायर मत बन' कविता के इन पंक्तियों में कवि कहते हैं कि अगर कोई दुष्ट, क्रूर मनुष्य तुमसे टक्कर लेने या युद्ध के लिए ललकारता हैं, तो उसकी ताकद से डरकर तुम पीछे मत हटना, पीठ दिखाकर भागना मत। संसार में कई महापुरुष और स्त्रियों ने अपने प्रेम और सेवाभाव से दुष्टों को भी जीत लिया हैं। क्योंकि हिंसा का जवाब प्रतिहिंसा तो नहीं है। किन्तु कायरता तो उससे भी अधिक अपवित्र है। 2

इसलिए कवि नरेंद्र शर्मा जी कहते है कि मनुष्य क्रुद्ध भी बन सकता है लेकिन उसे कायर नहीं बनना चाहिए।

विशेष:- भाषा सहज, सरल और प्रवाहमय है।

'खण्ड ग'

32) 'सूखी डाली' एकांकी के लेखक उपेन्द्रनाथ अश्क है। इसमें सम्मिलित परिवार का चित्रण किया गया है। दादाजी अपने परिवार को एक बड़े बरगद के पेड़ के समान मानते थे। अगर पेड़ की एक भी डाली टूट कर अलग हो जाए तो फिर चाहे उसे कितना भी पानी दो उसमें सरसता नहीं आ सकती।

दादा जी को पता चलता है कि परेश अलग होनेवाला है, तो वे परिवार के सभी सदस्यों को बुलाकर समझाते है कि कोई भी छोटी बहू का अनादर न करे। परिवार में छोटी बहू का व्यक्तित्व दब कर रह गया है क्योंकि वह केवल छोटी बहू रह गयी है। दादा जी के अनुसार बड़ा वास्तव में उम्र या दर्जे से नहीं होता। बड़ा व्यक्ति तो बुद्धि और योग्यता से होता है। छोटी बहू उम्र में न सही, अक्ल में हम सबसे निश्चय ही बड़ी है। हमें उसको लाभ उठाना चाहिए। उससे परामर्श लें, उसका काम भी आपस में बाँट लो और उसे पढ़ने-लिखने को समय दो। बेला को तब तक हँसी का निशाना बनाना ठीक नहीं, जब तक वह पूर्णतया इस घर का अंग न बन जाए। दादा जी यही आकांक्षा है कि पूरा परिवार एक-साथ हँसी-खुशी रहे। 5

अथवा

'सूखी डाली' एकांकी के लेखक उपेन्द्रनाथ अश्क है। दादाजी परिवार के सभी सदस्यों को बुलाकर समझाते है कि कोई बेला का अनादर न करे और उसे वही सम्मान मिले जो उसे अपने घर में मिलता था।

इसके उपरांत सभी का बरताव बदल जाता है। बेला को लगता है कि वह अपरिचितों के परिवार में आ गई है। उसके जाने पर सभी लोग खड़े हो जाते हैं। उसके सामने कोई हँसता नहीं। कोई अधिक समय तक बात नहीं करता। सब उससे ऐसे डरते हैं जैसे मुर्गी के बच्चे बाज से डरते हैं। उसे किसी भी काम को हाथ लगाने नहीं देते। परिवार के सभी सदस्य बेला का आदर करते हैं। परिवारवालों के बदलते व्यवहार के कारण, उन्हें समझने में असमर्थ बेला अपने मायके जाना चाहती थी। 5

---

33) 'प्रतिशोध' एकांकी के लेखक रामकुमार वर्मा हैं। भारवि के पिता श्रीधर श्लोक को पढते हैं और पत्नी सुशीला से उसे सुनने के लिए कहते हैं। तब सुशीला कहती है कि वह सुन रही है पर उसे भारवि की याद आ रही है। श्रीधर का कहना था कि भारवि आ जाएगा मगर उसके लिए उपनिषद् नहीं छोड़ना चाहिए। भारवि कवि है, कवि समय पर शासन करता है। तब सुशीला पुछती है कि क्या अब भारवि कवि बनकर मेरा पुत्र नहीं रहा। सुशीला पुत्र की व्यथा में व्याकुल हो रही थी। श्रीधर उसे शास्त्र का चिन्तन करने के लिए कहते हैं। वे कहते हैं, 'भारवि मूर्ख है और तुम...' सुशीला कहती हैं 'यदि पुत्र के लिए माँ की ममता मूर्खता है, तो ऐसी मूर्खता सदैव ही मुझ में बनी रहे।' भारवि के घर न लौटने के कारण माता-पिता इसप्रकार से में संवेदनशील संवाद बना रहता है। 4

अथवा

'प्रतिशोध' एकांकी के एकांकीकार रामकुमार वर्मा है। शास्त्रार्थ में पंडितों को हराते देख पिता ने भारवि के बारे में सोचा कि अगर इसी तरह से होता रहा तो उसका अंहकार बढ़ता ही जाएगा। उसे अपनी विद्वता का घमंड हो गया है उसका गर्व सीमा का अतिक्रमण कर रहा है। उन्होंने उसे ताड़ना दी और वह भी उग्र रूप से। उन्होंने भारवि से कहा कि तू महामूर्ख है, दंभी है, अज्ञानी है। श्रीधर अच्छी तरह से जानते थे कि घमंड अथवा अंहकार उन्नति में बाधक है। व्यक्ति को इससे दूर ही रहना चाहिए तभी वह अपने जीवन में आगे बढ़ सकता है। 4

खण्ड ध

34)
i) यह किताब किसकी है।
ii) तुम अपना काम करो।
iii) रोहन से पूछो।

35)
i) मैं कहानी लिखूंगा।
ii) आत्मानंद देश की सेवा करता था।
iii) शीला खाना बनाती है।

36)
i) कहारिन
ii) मोरनी
iii) बेटी

37)
i) सत्यवादी
ii) अपरिचित
iii) अंधविश्वास

38)
i) सफल = अ + सफल = असफल
ii) कार = सा + कार = साकार, आ + कार = आकार,
उप + कार = उपकार, प्र + कार = प्रकार,
प्रति + कार = प्रतिकार

39) i) धन + वान = धनवान
ii) स्वच्छंद + ता = स्वच्छंदता

40) [illegible]

40) i) भारत को विश्व सभ्यता का जनक कहा जाता है। 1

ii) प्रलय के बाद सृष्टि की रचना हुई। 1

iii) अपने ऐश्वर्य और समृद्धि के कारण भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता है। 1

iv) सभी प्रकार की कलाओं और विद्याओं का शुभारंभ भारत भूमि पर हुआ है। 1

आ)
41) मनोरंजन के आधुनिक साधन (निबंध)
1) भूमिका 2) मनोरंजन का अर्थ 3. मनोरंजन की आवश्यकता 4) प्राचीन काल में मनोरंजन के साधन 5) आधुनिक काल में मनोरंजन के साधन 6) मनोरंजन और मानव जीवन का अटूट संबंध 7) उपसंहार 4

<u>अथवा</u>

पत्र-लेखन : औपचारिक पत्र :
प्रेषक : पत्र लिखनेवाले का पता एवं दिनांक।
सेवा में : पत्र पानेवाले का पता
विषय।
संबोधन।
पत्र का कलेवर 4
समापन

42)
i) भारत में अनेक भाषाएँ हैं। 1

ii) भारत कृषि प्रधान देश है। 1

iii) कठिन परिश्रम के बिना सफलता नहीं मिलती। 1

:000: